# केयर्न ने काटी विश्वगुरु की नाक, विदेश में भारतीय संपत्तियाँ ज़ब्त

**मज़दूर मोर्चा ब्यूरो**

**नई दिल्ली :** दिग्गज स्कॉटिश एनर्जी कंपनी केयर्न एनर्जी ( Cairn Energy) ने पेरिस में कई भारतीय संपत्तियों को जब्त कर लिया है। भारत सरकार के साथ टैक्स विवाद (Cairn Energy Ta& Dispute) के बाद एक आर्बिट्रेज अदालत ने भारत सरकार को 1.7 अरब डॉलर का हर्जाना देने को कहा था। लेकिन भारत सरकार ने इससे इनकार किया था। फाइनेंशियल टाइम्स ने यह खबर दी है।अमेरिकी अदालत में मुकदमे के दौरान केयर्न ने एयर इंडिया की विदेश स्थित संपत्तियों को जब्त करने का आदेश मांगा था। उसका कहना है था कि चूंकि एयर इंडिया ( Air Energy)भारत सरकार की कंपनी है इसलिए उसकी संपत्ति जब्त की जा सकती है। इस बीच, भारत सरकार के आधिकारिक सूत्रों ने कहा है कि सरकार को इस बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है। सरकार तथ्यों का पता कर रही है। फ्रेंच अदालत से इस फैसले की औपचारिक सूचना मिलते ही लीगल एक्शन लिया जाएगा।

**एयर इंडिया के विमान भी होंगे ज़ब्त**

फाइनेंशियल टाइम्स की खबर के मुताबिक केयर्न एनर्जी 2 करोड़ यूरो की इन संपत्तियों का मालिकाना ट्रांसफर करवाएगी। फ्रांसीसी अदालत की ओर से जब्ती के आदेश के बाद यह प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इससे पहले केयर्न एनर्जी ने कहा था कि अदालती आदेश के बाद इसने विदेश में भारत की ऐसी 70 अरब अरब डॉलर की संपत्तियों की पहचान की है, जिन्हें जब्त किया जाना है। यह कीमत ब्याज और पेनाल्टी को लेकर है। खबरों में कहा गया है कि केयर्न एनर्जी भारत सरकार की जिन संपत्तियों को जब्त करने के लिए चिन्हित किया है उनमें एयर इंडिया के विमान और शिपिंग कॉरपोरेशन इंडिया के जहाज भी शामिल हैं।

एक आर्बिट्रेज अदालत ने दिसंबर में भारत सरकार को आदेश दिया था कि वह केयर्न एनर्जी को 1.2 अरब डॉलर से अधिक का ब्याज और जुर्माना चुकाए। भारत सरकार ने इस आदेश को स्वीकार नहीं किया, जिसके बाद केयर्न एनर्जी ने भारत सरकार की संपत्ति को जब्त करके वसूली के लिए विदेशों में कई न्यायालयों में अपील की। भारत की ऐसी 70 अरब अरब डॉलर की संपत्तियों की पहचान की है, जिन्हें जब्त किया जाना है। यह कीमत ब्याज और पेनाल्टी को लेकर है। खबरों में कहा गया है कि केयर्न एनर्जी भारत सरकार की जिन संपत्तियों को जब्त करने के लिए चिन्हित किया है उनमें एयर इंडिया के विमान और शिपिंग कॉरपोरेशन इंडिया के जहाज भी शामिल हैं।

# भारत-पाक के लोगों को रुलाकर चला गया सदी का लोकप्रिय कलाकार

यूसुफ भाई यानि दिलीप कुमार साहब बुधवार को दुनिया ए फ़ानी से कूच कर गए...। दो साल और जिन्दा रहते तो सौ साल के हो जाते। ऐसे नायाब अदाकार के बारे में लिखने के लिए अल्फ़ाज़ नहीं हैं। ऐसा कलाकार जिसके लिए लोग भारत से लेकर पाकिस्तान तक रोये।

हमारी पीढ़ी के लोग अमिताभ की फ़िल्मों को देखते हुए बड़े हुए लेकिन बाद जिन्होंने दिलीप साहब की कुछ फ़िल्में देखीं तो इनके फ़ैन हो गए।

आप दिलीप साहब की कोई फिल्म देखिए, वो किरदार को आत्मसात कर लेते थे। ...गोपी, संघर्ष, गंगा जमुना, नया दौर, शहीद, काबुलीवाला, राम और श्याम, ज्वार भाटा या कालजयी मुगल ए आज़म और देवदास को ही ले लीजिए। बाद के दौर में सौदागर, शक्ति, मज़दूर, कर्मा आदि में उनकी एक्टिंग को देखिए।...वह दर्द के बादशाह थे।

...और भी फ़िल्में होंगी जो दोस्तों को ज़रूर याद होंगी। उनका जिक्र नहीं करने का अर्थ यह नहीं है कि वो ख़राब फ़िल्में थीं।

फिल्मों में उनकी डॉयलॉग अदायगी में उर्दू शब्दों का चयन जान डाल देता

था। बाद में पता चला कि उर्दू उनकी पसंदीदा भाषा है। कभी मुशायरों में जाते तो पूरा मुशायरा सुनकर ही उठते थे।

वह बुलंदी के जिस मुक़ाम पर जब थे, चाहते तो राजनीतिक रूप से बहुत फ़ायदा उठा सकते थे लेकिन उन्होंने उस तरफ़ कभी देखा ही नहीं।

वह स्वतंत्रता सेनानी भी थे और जब पूना (पुणे) में रहते थे तो जेल भी काटी। वहाँ वो एयरफ़ोर्स कैंटीन में काम करते थे। जवानी का जोश था। कैंटीन में ही अंग्रेजों की हुकूमत के खिलाफ़ भाषण दिया तो पुलिस ने आकर गिरफ़्तार कर लिया। उनकी आत्मकथा में यह मामला दर्ज है। लेकिन दिलीप साहब ने कभी इस घटना को भुनाया नहीं।

उनकी तमाम फ़िल्में ऐसी हैं और भारतीय सिनेमा में उनके योगदान के लिए उन्हें भारत रत्न तो दिया ही जा सकता था। जब पाकिस्तान उन्हें अपना सर्वोच्च सम्मान निशान-ए-पाकिस्तान दे सकता है तो भारत क्यों नहीं उन्हें भारत रत्न दे सकता है। जिस मुल्क में उन्होंने ज़िन्दगी खपा दी। ऐसे कलाकार सदियों में पैदा होते हैं।

**सायरा बानो साहिबा के ज़िक्र के बिना यह खिराजे अकीदत अधूरी रहेगी। सायरा बानो साहिबा की जितनी तारीफ़ की जाए कम है। उन्होंने दिलीप साहब का पूरा ख़्याल रखा, आख़िरी वक्त तक साथ रहीं। उन्हें नारीवादी एक परंपरागत भारतीय महिला ही कहेंगे लेकिन बॉलीवुड में तो लोग परंपरा भी नहीं निभाते साहब...आये दिन अस्पताल ले जाने से लेकर प्यार की जो थेरेपी वो देती थीं, दिलीप साहब की लंबी उम्र में सायरा बानो साहिबा का विशेष योगदान है।**

**-साइबर नज़र**

# फ्रांस में राफेल के जांच की आंच मोदी तक पहुंचेगी जरूर

## कांग्रेस की मांग पर अगर जेपीसी बनी तो मामला ठंडे बस्ते में चला जाएगा

**मजदूर मोर्चा ब्यूरो**

**नई दिल्ली:** भारत-फ्रांस की राफेल डील में गड़बड़ी या आर्थिक घोटाले की आंच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक पहुंचना तय है। फ्रांस में एक जज ने इस डील में दलाली के लेन-देन की बाकायदा जांच शुरू कर दी है। फ्रांस मीडिया में राफेल डील के कथित घोटाले का मामला सामने आने के बाद कांग्रेस ने केंद्र की मोदी सरकार पर तीखे हमले किए हैं और संयुक्त संसदीय समिति बनाने की मांग की है। 2016 में भारत-फ्रांस के बीच राफेल लड़ाकू विमान खरीदने के लिए 59000 करोड़ रुपये (7.8 बिलियन यूरो) की डील हुई थी। उस समय इस पर काफी विवाद हुआ। मोदी सरकार ने तब कहा था कि वह राष्ट्रीय सुरक्षा के मद्देनजर इस डील की शर्तों को सार्वजनिक नहीं कर सकती। मामला सुप्रीम कोर्ट भी पहुंचा था और सुप्रीम कोर्ट ने तब मोदी सरकार के रुख को सही ठहराया था। लेकिन फ्रांस की मीडिया ने इसमें जो सनसनीखेज खुलासे किए हैं, उसने राफेल डील को लेकर तमाम तरह के शक पैदा कर दिए हैं।

**क्या है पूरा मामला**

राफेल की कहानी शुरू होती है 2007 से। यूपीए शासनकाल में डॉ मनमोहन सिंह की सरकार ने भारतीय वायुसेना के लिए 126 लड़ाकू विमान खरीदने के लिए अंतरराष्ट्रीय टेंडर आमंत्रित किए थे। इस टेंडर प्रक्रिया में फ्रांस की कंपनी दसाल्ट (ष्ठड्डह्यह्यड्डह्वद्यह्ल) के राफेल और यूरोफाइटर के टाइफून दौड़ में सबसे आगे थे। 2012 में टेंडर खोले गए। 12 दिसम्बर 2012 को राफेल बनाने वाली कंपनी दसाल्ट ने प्रति विमान 526.1 करोड़ की बोली लगाई। डॉ. मनमोहन सिंह के समय में बातचीत चलती रही लेकिन डील फाइनल नहीं हुई।

2014 में सरकार बदल गई। भाजपा सत्ता में आ गई और नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने।

राफेल और भारत सरकार के बीच डील पर फिर से बातचीत शुरू हुई। प्रधानमंत्री मोदी फ्रांस की यात्रा पर गए। उस समय राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद थे, जबकि मौजूदा राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन उस समय वित्त मंत्री थे। ओलांद ने मोदी का जबरदस्त स्वागत किया। 2016 में दसाल्ट ने नए सिरे से 36 राफेल विमान बेचने के लिए 59000 करोड़ की डील की। एक विमान की कीमत करीब 1670 करोड़ रुपये रखी गई। यूपीए समय की डील की बातचीत में सरकारी क्षेत्र की कंपनी हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स शामिल थी लेकिन मोदी सरकार के समय जो डील हुई उसमें अनिल अंबानी कंपनी रिलायंस इन्फ्रास्ट्रक्चर शामिल थी, जिसके पास इससे पहले किसी भी तरह का डिफेंस का सामान

बनाने का अनुभव नहीं था।

**फ्रांस के मीडिया का अहम रोल**

फ्रांस के एक एनजीओ शेरपा ने 2018 में फ्रांस सरकार से भारत-फ्रांस राफेल डील में दलाली का आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराई। उस समय फ्रांस में ऐसे मामलों की कानूनी संस्था पब्लिक प्रॉजिक्यूशन सर्विस (पीएनएफ) ने शेरपा की जांच की मांग खारिज कर दी। अप्रैल 2021 में फ्रांस के मीडियापार्ट ने दस्तावेजों के आधार पर राफेल डील में कथित करप्शन के मामले को छापना शुरू कर दिया। पूर्व राष्ट्रपति ओलांद के खिलाफ भ्रष्टाचार के कई और भी मामले उजागर हुए। इस बीच पीएनएफ के नए चीफ जीन फ्रेंकोइस बोहर्ट ने मीडियापार्ट के खुलासे के आधार पर जांच का आदेश दे दिया। 14 जून से पीएनएफ ने बाकायदा इसकी जांच शुरू कर दी है।

मीडियापार्ट के आरोपों के आधार पर ही कांग्रेस हमलावर है। मोदी सरकार की असली चिंता कांग्रेस नहीं, बल्कि फ्रांस की संवैधानिक संस्था पीएनएफ है। जिसका फैसला आने पर अगर करप्शन का मामला सही पाया गया तो भाजपा सरकार की मुसीबत बढ़ सकती है।

**कौन-कौन हैं जांच के दायरे में**

फ्रांस में पीएनएफ जो जांच कर रहा है, उसमें फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति ओलांद, मौजूदा राष्ट्रपति, इमैनुएल मैक्रॉन, फ्रांस के रक्षा मंत्री, जो आज विदेश मंत्री हैं और अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस इन्फ्रा जांच के दायरे में है। अगर रिलायंस पर आरोप साबित हो गए यानी करप्शन का आरोप सही पाया गया तो उसकी आंच सीधे केंद्र सरकार तक पहुंचेगी। क्योंकि भारत की ओर से डील की पहल प्रधानमंत्री मोदी ने की थी और तब उसमें रिलायंस इन्फ्रा शामिल हुई थी। पीएनएफ ने शुरुआती जांच में ही इसे महाघोटाला कहा है।

**मीडियापार्ट के आरोप**

कांग्रेस के प्रमुख नेता राहुल गांधी ने पिछले शनिवार को एक ट्वीट किया था, जिसमें लिखा था-चोर की दाढ़ी...। बता दें कि दरअसल यह एक मुहावरा है, जिसकी पूरी लाइन है-चोर की दाढ़ी में तिनका। जाहिर है कि राहुल का इशारा कहां है। राहुल और कांग्रेस पहले भी राफेल डील में भ्रष्टाचार के आरोप लगा चुके हैं, जिनकी पुष्टि अब मीडियापार्ट भी कर रहा है। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता रणदीप सिंह सुरजेवाला ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके मीडियापार्ट के खुलासे के बारे में विस्तार में विस्तार से बताया।

मीडियापार्ट ने राफेल डील की कुछ प्रमुख बातें बताईं, जो चौंकाती हैं।

1. जो डीआरएएल कंपनी बनाई गई, दसाल्ट रिलायंस एरो स्पेस लिमिटेड उसमें रिलायंस 51 प्रतिशत मालिक है और जो दसाल्ट है, वो 49 प्रतिशत मालिक है।

2. इस कंपनी में दोनों भागीदारों द्वारा रिलायंस और दसां द्वारा 169 मिलियन यूरो इनवेस्टमेंट अधिक से अधिक करने का निर्णय किया गया। परंतु दसाल्ट जो 49 प्रतिशत हिस्सेदार है, वो 169 मिलियन यूरो में से 159 मिलियन यूरो लाने के लिए बाध्य होगी और 51 प्रतिशत की मालिक रिलायंस केवल 10 मिलियन यूरो लाएगी।

3. इस समझौते का क्लाज 4.4.1 जो दसाल्ट और रिलायंस के बीच है, उसमें जहाज बनाने की सारी तकनीक, सारी विशेषज्ञता तो दसाल्ट एविएशन लाएगी, तो फिर रिलायंस क्या लाएगी। रिलायंस लाएगी मार्केटिंग फार प्रोग्राम एंड सर्विसेज विद गवर्मेंट ऑफ इंडिया। कांग्रेस और सुरजेवाला का सवाल है कि ये कौन सी सर्विस विद गवर्मेंट ऑफ इंडिया थी जो रिलायंस लेकर आ रही थी? जाहिर है कि अनिल अंबानी की कंपनी ने दलाली की मार्केटिंग का स्कोप इसमें तलाशा होगा।

**4, 25 मार्च, 2015 को दसां के सीईओ एरिक ट्रैपियर बैंगलोर आते हैं और भारतीय वायु सेना के प्रमुख एवं एचएएल के प्रमुख की मौजूदगी में दसाल्ट और एचएएल के समझौते की पुष्टि करते हैं। पर 24 घंटे में ही 26 मार्च, 2015 को दसांल्टएविएशन अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस इन्फ्रा से अपना नया एग्रीमेंट एमओयू साइन कर लेती है। ये 15 दिन पहले है यानी 10 अप्रैल, 2015 से पहले। ये वो तारीख है जब प्रधानमंत्री मोदी यकायक फ्रांस बिना किसी को बताए गए और 7.8 बिलियन डॉलर के 36 राफेल एयरक्राफ्ट खरीदने का निर्णय कर दिया।**

5. स्वाभाविक तौर से इस समझौते के बाद भारत सरकार की कंपनी हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड जो जहाज बनाती आई है, उसको राफेल सौदे से बाहर कर दिया गया।

**व्यंग्य**

# हर कोई उसकी दाढ़ी पर हाथ फेर रहा है

**यूसुफ किरमानी**

**धी**रे धीरे मुझे समझ में आ रहा है कि संस्कारी पार्टी वाले उसे पप्पू क्यों कहते हैं।

कल पप्पू ने राफेल डील पर टिप्पणी करते हुए सिर्फ़ इतना कहा-चोर की दाढ़ी...

जो पूरा मुहावरा न बोल पाए कि - चोर की दाढ़ी में तिनका...तो संस्कारी पार्टी वाले उसे पप्पू न कहें तो क्या कहें...यानी पप्पू वो कहलाता है जो मुहावरे तक को पूरा नहीं बोल पाता है।

लेकिन मुहावरे को आधा लिखने के बावजूद संस्कारी पार्टी वाले पप्पू को पप्पू बोलना छोड़कर दाढ़ी की बात दिल पर ले गए और उस लड़के यानी पप्पू को औंल-फौल बकने लगे।

इस घटना से यह तथ्य सामने आया कि जो पप्पू है वो जानबूझकर पप्पू बना हुआ है ताकि लोगों का पप्पू बना सके। उसने राफेल-वाफेल फाइटर विमान खरीद में संस्कारी पार्टी को पप्पू बना दिया। राफेल-वाफेल की जाँच शुरू होने पर संस्कारी लोग विदेशी सरकार से इतना नाराज़ नहीं हैं जितना इस पप्पू से नाराज़ हैं। मतलब ये कि पप्पू न हुआ पापुआ न्यू गिनी का माइकल लुहार हो गया। जिसके हर हथौड़े से चोर-चोर निकल रहा है।

आज संयोग से एक कार्टूनिस्ट ने किसी शख़्स की दाढ़ी का कैरिकेचर बनाया और दाढ़ी में तिनका लटका दिया। संस्कारी भाई इस कार्टूनिस्ट को भी उल्टा सीधा बोल रहे हैं। मेरे जैसे जिन्हें नहीं भी पता था कि वो किसकी दाढ़ी है, वो भी जान गए कि ये किन साहब की दाढ़ी है और उसमें तिनका क्यों लटका हुआ है।

**अब हालत ये है कि हर कोई साहब की दाढ़ी पर हाथ फेर रहा है और तिनका उससे निकलने का नाम नहीं ले रहा है। दाढ़ी पर हाथ फेरने वाले कह रहे हैं कि इस दाढ़ी के हम चौकीदार हैं। इसकी रखवाली हमारा परम कर्तव्य है। पप्पू चोर-चोर की रट लगाए है। दाढ़ी वाला इतना असहाय कभी नहीं दिखा। उसे खुद अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते शर्म आ रही है कि वो कहे तो कहे क्या और करे तो करे क्या। ऐसा कौन सा मास्टर स्ट्रोक है जो इस तैमूरी दाढ़ी से ध्यान बंटा सके। उसने अतीत के मास्टर स्ट्रोक में झांकने की कोशिश की तो वहां दंगे-फसाद, फर्जी एनकाउंटर, युद्ध, नदियों में तैरती लाशें नजर आईं। इनमें से किस मास्टर स्ट्रोक का चुनाव करे। इस पर अभी वो विचार कर रहा है।**

इस बीच, मैंने यह जानने की कोशिश की कि चोर दाढ़ी रखते हैं या नहीं। इस पर दिल्ली यूनिवर्सिटी के किसी प्रोफ़ेसर चिरौंजी प्रसाद पांडे ने बताया कि चोर की पहचान आप उसकी दाढ़ी और कपड़ों से नहीं कर सकते। जैसे कुछ लोग ख़ास कपड़े पहनने के कारण पहचाने जाते हैं लेकिन चोरों पर यह बात फ़िट नहीं होती। चोर या निहायत सज्जन रामप्रकाश हो, आप उनकी दाढ़ी से उनके पेशे की पहचान नहीं कर सकते। नेता अगर दाढ़ी में है तो ज़रूर चोर होगा, यह संभव तो है लेकिन हर केस में सही नहीं है। अगर किसी ने दस लाख का सूट पहना है और नेता नहीं है तो भी वो चोर हो सकता है। आप चोर की दाढ़ी में फंसे तिनके पर नजर डालिए, उस चोर की पहचान वहां छिपी है। तिनके के रूप में राफेल फंसा है तो बड़ा चोर, तिनके में पुलवामा फंसा है तो ख़ूंखार चोर, तिनके में कोई केयर फंड फंसा है तो उसे चालाक चोर आदि कह सकते हैं। यानी जैसा तिनका होगा, उस लेवल का चोर कहलाएगा।

प्रो. चिरौंजी प्रसाद पांडे ने बताया कि वर्तमान दौर में चोरों ने काफ़ी तरक्की की है। वे देवानंद के जमाने के ज्वैल थीफ नहीं हैं। वे आज के चोर हैं जो ख़तरों के खिलाड़ी हैं। ऐसे चोरों के बारे में आप यह तक नहीं बता सकते कि ऐसे चोर आम काटकर खाते होंगे या चूसकर। ये आम को गुठली समेत भी खा सकते हैं। प्रार्थना कीजिए की ऐसे चोरों से किसी का वास्ता न पड़े।